आदिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियाँ → आदिकालीन हिन्दी साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियों का अनुशीलन करते समय हमारा ध्यान सबसे पहले हजारी प्रसाद द्विवेदी के इस कथन की ओर जाता है कि "दो प्रकार के साहित्यिक प्रयत्न इस काल में प्रमुख हैं - एक तो बौद्ध और नाथ सिद्धों की तथा जैन मुनियों की रचना और उपदेश मूलक और दूसरी हठयोग या कायायोग की महिमा प्रचार करने वाली रहस्य मूलक रचनाएँ जिनका उद्देश्य रस सृष्टि नहीं, साहित्य के इतिहास में दो कारणों से इतना महत्व है। एक तो परवर्ती धार्मिक काव्य रचनाओं के विकास में सहायक है और उन धार्मिक ग्रन्थों को ~~सामने~~ समझने में सहायता पहुँचाती है जिसके बिना हम कारण प्रयत्नों को समझ ही नहीं पायेंगे। और दूसरे इनके अध्ययन से उस युग की भाषा शैली, छन्द विधान आदि का अध्ययन सुगम होता है। इन रचनाओं में रचना को कभी-कभी बड़ी प्रभावशाली भाषा में प्रकट किया गया है।

दूसरी श्रेणी में चारण कवियों के चरित्र काव्य हैं जिनमें राजस्तुति युद्ध

विवाह आदि के वर्णन हैं। इस काल की रचनाएँ नारीत्व से ओत प्रोत हैं। इस साहित्य के पुरुष पात्रों के लिए हँसते-हँसते प्राण दे देते हैं। युद्ध में शत्रु वाहिनी को काट-काट कर गिर पड़ते हैं और उनकी स्त्रियाँ पति के इस वीरत्व पर अभिमान करती हैं और मन, वचन, कर्म से पति के साथ आनन्द लोक की यात्रा करने के लिए सदा प्रस्तुत रहती हैं।

उक्त दो प्रमुख प्रवृत्तियों के साथ-साथ इस काल में ऐतिहासिक व्यक्तियों के आधार पर चरित्र काव्य लिखने की प्रथा भी बड़ी तेजी से चली। डॉ० द्विवेदी जी के कथनानुसार — "इनमें कोई ऐतिहासिक पुरुष कवियों के आश्रयदाता हुआ करते थे। चंदबरदायी के आश्रयदाता पृथ्वीराज थे और विद्यापति के आश्रयदाता कीर्ति सिंह। इन आश्रयदाताओं का चरित्र लिखते समय भी इन्हें धार्मिक रंग देने का प्रयत्न किया जाता था। रासो में कवि चन्द की पत्नी ने प्राकृत राजा के यशोवर्णन को अनुचित कहा था। उसने बताया था कि साधारण 'ण' राजा का यश गाने की अपेक्षा भगवान का यश गाना कहीं उत्तम है। इस पर कवि ने विस्तार से दशावतार चरित्र का वर्णन किया — ऐसा लगता है कि रासोकार ने पृथ्वीराज को भगवत स्वरूप बताकर कहानी में थोड़ा धार्मिकता का रंग देना चाहा था। कीर्तिलता के कवि ने भी पाठक को कुछ पुराणगाथा का प्रयोग किया था।

इस काल की चौथी प्रवृत्ति लौकिक रस की रचनाएँ लिखने की भी रही। 'संदेशरासक', ढोला आदि कृतियाँ उल्लेखनीय हैं। संदेशरासक की कहानी बहुत सरल और मर्मस्पर्शी है और उसमें विरहिणी की आंतरिक अनुभूतियों का हृदयस्पर्शी अभिव्यक्ति हुआ था। साथ ही उक्त चार मुख्य प्रवृत्तियों के अतिरिक्त अन्य प्रकार की कुछ कृतियाँ भी मिलती हैं। जैसे अमीर खुसरो की पहेलियाँ और विद्यापति की पदावली आदि।

संक्षेप में हिन्दी साहित्य की पृष्ठभूमि और प्रवृत्तियाँ
ई० – 650 ← गई है।